BHAJAN

CD 03

RAM MAHIMA

राम नाम अति मीठा है

राम नाम अति मीठा है, कोई गाके देख ले,
आ जाते हैं राम, कोई बुला के देख ले ॥

मन भगवान का मन्दिर है, यहाँ मैल न आने देना,
हीरा जन्म अनमोल मिला, इसे व्यर्थ गवां न देना,
शीश दिए हरि मिलते हैं, लुटा के देख ले ॥

जिस मन में अभिमान भरा, भगवान कहाँ से आए,
घर में हो अन्धकार भरा, मेहमान कहाँ से आए,
राम नाम की ज्योति हृदय, जला के देख ले ॥

गीध अजामिल गज गणिका ने, ऐसी करी कमाई,
नीच करम को करने वाला, तर गया सदन कसाई,
पत्थर से हरि प्रगटे हैं, प्रगटा के देख ले ॥

आधे नाम पे आ जाते हैं, है कोई बुलाने वाला,
बिक जाते हैं राम, कोई हो मोल चुकाने वाला,
कोई जौहरी आके, मोल लगा के देख ले ॥

पत्ते पत्ते डाली डाली मेरा राम वसदा

पत्ते पत्ते डाली डाली मेरा राम वसदा ।
सारी सृष्टि दा है वाली मेरा राम सबदा ॥

किसने जाणी तेरी माया,
किसने भेद तेरा है पाया ।
ऋषि मुनियां ने तैनूं ध्याया,
मेरा राम सबदा ॥१॥

ए संसार है तेरा मन्दिर,
तू ही रमया सब दे अन्दर ।
वस जा मेरे वी मन मन्दिर,
मेरा राम सबदा ॥२॥

राम दे रूप दी छटा निराली,
अखियाँ पीवण भर-भर प्याली ।
दर तो जावां न मैं खाली,
मेरा राम सबदा ॥३॥

सब दे मालिक पालनहारे,
दर्शन दे मेरे राम प्यारे ।
राहवां तक तक नैणा हारे,
मेरा राम सबदा ॥४॥

जरा आ शरण मेरे राम की

जरा आ शरण मेरे राम की,
मेरा राम करूणा-निधान है ,
मेरा राम करूणा-निधान है,
मेरा राम किरपा-निधान है ॥

पल पल तू उसका ध्यान कर,
उसके आगे फरियाद कर,
तेरे कष्ट सब कट जाऐंगे,
तेरे पाप सब धुल जाऐंगे,
मेरा राम करूणा-निधान है,
मेरा राम किरपा-निधान है ॥१॥

लिया आसरा जिस नाम का,
वो तो बन गया श्री राम का,
जिस नाम से पत्थर तरे,
तेरा तरना तो आसान है,
मेरा राम करूणा-निधान है,
मेरा राम किरपा-निधान है ॥२॥

लगी भीलनी को ये आस थी,
प्रभु कब आयेंगे ये प्यास थी,
झूठे बेर खाये राम ने,
ये तो जाने सारा जहान है,
मेरा राम करूणा-निधान है,
मेरा राम किरपा-निधान है ॥३॥

मन चंचल चल राम शरण में

मनसा वाचा कर्मणा, मैं हूँ मेरे राम,
अर्पित तेरी शरण में, सहित कर्म शुभ काम ॥

मन चंचल चल राम शरण में ॥

राम ही तेरा जीवन साथी,
मित्र हितैषी सब दिन साथी,
दो दिन के हैं ये जग वाले,
हरि अंग संग है जन्म मरण में ॥१॥

जग में तूने प्यार बढ़ाया,
कितना सिर पर भार चढ़ाया,
पल-पल मुश्किल होगी रे पगले,
भवसागर के पार करन में ॥२॥

सब चिंता मिट जायें तेरी,
भज ले तज दे हेरा फेरी,
इक निर्दोष ठिकाना कर ले,
शरण मिले हरि कमल चरण में ॥३॥

राम मैं तो जब से शरण तेरी आया

राम मैं तो जब से शरण तेरी आया
आनन्द आनन्द आनन्द मैंने पाया

अन्धकार में भटक रहा था, सूझे न कोई किनारा
तूने मन में जोत जगा कर, दूर किया अन्धियारा
तू ही है एक सहारा, जीवन का सच पाया

हर दम मेरे पास रहा तू, फिर भी देख न पाया
जग बन्धन में ऐसा डूबा, खुद में रहा भरमाया
भटके हुए राही को, राह पे तूने लगाया

अनमोल था ये जीवन मेरा, यूँही व्यर्थ गंवाया
धन दौलत के पीछे भागा, पास न तेरे मैं आया
मैं अब तक था अंजाना, अब मन में तूही समाया

धुन -- राम मेरे राम सांचा है तेरा नाम

मेरे तो बस एक ही राम

मेरे तो बस एक ही राम,
और न कोई मेरा धाम,
कण कण मेरा राम रहे,
राम में मेरा मन और ध्यान ॥

सागर सा गहरा है राम,
अम्बर सा फैला है राम,
मेरे इस छोटे से मन में,
रहता है बस केवल राम,
जन्मों का जन्म वही,
जीवों का जीवन है राम ॥

इक चर्म बिन्दु सा है मेरा राम,
वो सहज नाद मानस का है,
वो ज्ञान ध्यान विज्ञान सभी,
इक अनंत झरना रस का है,
सासों का वाहन है राम,
प्राणों का गायन है राम ॥

भीतर का अक्षर है राम,
बाहर की विसृत भाषा है,
है बीज मंत्र, है आदि सूत्र,
भाषाओं की परिभाषा है,
तेरे पथ की धूल मेरे,
माथे का चन्दन है राम ॥

मेरे राम राय

मेरे राम राय
तू संतां दा संत तेरे ॥

तेरे सेवक को भौ कछु नाहीं,
यम नहीं आवे नेड़े ॥
मेरे राम राय . . .

जो तेरे रंग राते स्वामी,
तिन का जनम मरण दुख नासा
तेरी बक्श न मेटे कोई,
सतगुरू का दिलासा ॥
मेरे राम राय . . .

जिस के सिर ऊपर तू स्वामी,
सो दुख कैसा पावे,
बोल न जाने माया मद माता,
मरना चित्त न आवे ॥
मेरे राम राय . . .

प्रभुजी, तुम चन्दन हम पानी

प्रभुजी, तुम चन्दन हम पानी,
जाकी अँग अँग बास समानी ॥

प्रभुजी, तुम घन बन, हम मोरा,
जैसे चितवत चंद चकोरा ॥

प्रभुजी, तुम मोती हम धागा,
जैसे सोने हि मिलत सुहागा ॥

प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती,
जाकी जोति जगै दिन राती ॥

प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा,
ऐसी भगति करै रैदासा ॥

प्रेम मुदित मन से कहो

प्रेम मुदित मन से कहो,
राम राम राम, राम राम राम,
राम राम राम, श्री राम राम राम ॥

पाप कटै दुख मिटै लेत राम नाम,
भव समुद्र सुखद नाव एक राम नाम ॥
प्रेम मुदित मन . . .

परम शांति सुख निधान एक राम नाम,
निराधार को आधार एक राम नाम ॥
प्रेम मुदित मन . . .

मात पिता बन्धु सखा सबहि राम नाम,
भक्त जनन जीवन धन एक राम नाम ॥
प्रेम मुदित मन . . .

राम सुधा रस पीने वाला

राम सुधा रस पीने वाला रहता हरा भरा,
बेड़ा पार लगा ले भईया, राम राम तू गा ।

अल्हड़ चंचल ज्यों नदिया जल, पवन वेग सा उड़ता मन ।
ऐसी ज्योति जगा ले भईया, छूट जाये भीतर का तम ।
द्वार खोलने को मुक्ति का, मन पे काबू पा ॥१॥
बेड़ा पार लगा ले भईया . . .

तट बन कर जो रहा किनारे, लहर वही लौटाता है ।
सुख दुःख तो काया का गहना, बनता आता जाता है ।
मरा मरा कहकर भी खुलता, द्वार मुक्ति का ॥२॥
बेड़ा पार लगा ले भईया . . .

चल हट बुहार मन को अपने, मानव मूल जगाता चल ।
याद करे से दया ही उपजे, प्रेम की ज्योति जगाता चल ।
राम नाम गंगा सा पावन, डुबकी जरा लगा ॥३॥
बेड़ा पार लगा ले भईया . . .

रामा रामा, मेरे रामा

तुझसे हमने दिल है लगाया

तुझसे हमने दिल है लगाया जो कुछ है सो तू ही है,
हर दिल में तू ही है समाया जो कुछ है सो तू ही है ॥

तू धरती है तू ही अम्बर, तू पर्बत है तू ही सागर,
कठपुतले हम, तू नट नागर, जड़ चेतन सब ही को नचाया ॥
जो कुछ है सो तू ही है . . .

सांस-सांस में आता जाता, हर धड़कन में याद दिलाता,
तू ही सबका जीवन दाता, रोम-रोम में तू ही समाया ॥
जो कुछ है सो तू ही है . . .

बजा रहा है मधुर मुरलिया, मन वृन्दावन में सांवरिया,
सबको बना दिया बावरिया, स्वर में ईश्वर दरस कराया ॥
जो कुछ है सो तू ही है . . .